अनुवाद के वैश्विक परिप्रेक्ष्य : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. हरप्रीत कौर
सहायक प्राध्यापक अनुवाद अध्ययन विभाग
म. गां.अं हिं वि वर्धा महाराष्ट्र

भूमिका : प्रस्तुत शोध आलेख के अंतर्गत अनुवाद के वैश्विक परिदृश्य पर प्रकाश डाला गया है । अनुवाद अपने वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भाषाई सीमाएं पार करते हुए जिस तरह से समाज को बड़े पैमाने पर प्रभावित कर रहा है वह अचंभित करने वाला है। अनुवाद ने न केवल सामाजिक बल्कि राजनैतिक आर्थिक, साहित्यिक,पर्यटन आदि समाज के किसी भी क्षेत्र को अनछुआ नहीं छोड़ा है। वह लागातार प्रभावित करते हुए प्रवाहमान है। जिस तरह से आज हम पूरे विश्व को अपनी जेब में रखने के आभासी संसार में विचरण कर रहे हैं वह सब का सब अनुवाद की देन है। विश्व की किसी भी भाषा को गूगल अपनी क्षमतानुसार अनुदित करके प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। विश्व बाजार की पूरी संकल्पना अनुवाद आश्रित है। पल प्रतिपल बदल रही सूचनाएँ अनुवाद के माध्यम से ही हम तक पहुँच पाती हैं। किसी भी भाषा में लिखा जा रहा श्रेष्ठ चर्चित साहित्य अनुदित होकर सभी भाषाओं में उपलब्ध हो जाता है। अनुवाद ने इस भाषाई सीमा को ही नहीं बल्कि तमाम सांस्कृतिक सीमाओं के पार जाकर विश्व को एकजुट करने का प्रयास किया है । जिसे हम सब समवेत स्वर से स्वीकार करते हैं । भाषा ,संस्कृति और अनुवाद आपस में गहरे जुड़े हुए हैं।भाषाई भिन्नता, सांस्कृतिक भिन्नता और आपस में संवाद की आवश्यकता ने अनुवाद को जन्म दिया। इसलिए अनुवाद में हम हमेशा संस्कृतियों के आदान-प्रदान के सूत्र तलाशने का प्रयास करते हैं ।अत: इस शोध पत्र में यही देखने का प्रयास किया गया है कि अनुवाद के वैश्विक परिप्रेक्ष्य क्या हैं?बाजार से लेकर हमारी दिनचर्या और ज्ञान के अन्य अनुशासनों से अनुवाद का क्या संबंध है ?

शोध प्रविधि : प्रस्तुत आलेख के अंतर्गत विश्लेषणात्मक और अंतरानुशासनिक प्रविधि का उपयोग किया गया है।

कुंजी शब्द: मिथक परंपरा ,ब्युरोक्रेट, क्युबिज्म,कार्पोरेट वैश्विक संस्कृति,उपनिवेश्वादी सोच, कोड मिश्रण, रूपांतरण, सांख्यिकी अर्थ, प्रयुक्तियां, विचारशैली, विसम्यकारी अवतार

भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद के बगैर आपसी आहार-विहार असंभव है। जाने अनजाने हर भारतीय अनुवाद को अपने व्यवहार में शामिल कर चुका है खासकर वे जो रोजगार की तलाश में अपने राज्य से बाहर दूसरे स्थान पर गये वे सब अपनी मातृभाषा में कोड मिश्रण करते हुए दिनचर्या पुर्ण करते हैं। हालांकि कई लोगों का यह मानना है कि थोडा अधूरापन ही अनुवाद की श्रेष्ठ्ता का द्द्योतक है। आखिर पाठक को भी तो लगना चाहिए कि वह अनुवाद पढ रहा है,मूल नहीं।जिस तरह नाटक देखते हुए हमें यह हमेशा पता होता है कि हम नाटक देख रहे हैं, वास्तविकता नहीं भले ही नाटक वास्तविकता से कितना ही बडा क्यों ना हो। कम अनुवाद ही ऐसे होते हैं जो वैश्विक स्तर पर अपने अस्तित्व को मूल से अलग सिद्द करने में सफल होते हैं. ऐसे अनुवाद किसी कृति को कालजयी सिद्द करने में भी अपनी भुमिका निभाते हैं कई बार कोई रचना अनुवाद के पश्चात अपनी पहुंच का दायरा इतना विस्तृत कर लेती है कि लोग उसे पसंद करने लगते हैं और वह भाषाई सीमाओं के साथ-साथ काल की सीमाओं पर भी विजय प्राप्त कर लेती है। अनुवाद को अक्सर हम भाषा के दृष्टिकोण से देखते हैं लेकिन क्या अनुवाद केवल भाषा तक सीमित है ? अनुवाद हमारे जीवन में इतना घुल-मिल गया है कि हम उसे ना जानते हुए भी उसकी दया दृष्टि और

विचारशैली में जीते रहते हैं। इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में यह संभव नहीं है कि हम अनुवाद को परे रखकर अपनी जीवन शैली रचनात्मकता या जीवन के दृष्टिकोण तय कर पाएं। अनुवाद हमारी रग-रग में इस तरह शामिल हो चुका है कि विज्ञान की कोई अधूनातन तकनीक भी किसी डी.एन.ए से उसके होने के साक्ष्य प्रस्तुत नहीं कर सकती।अनुवाद हमारे जीवन में कितनी और कैसी घुसपैठ कर चुका है,यह हम सोच भी नहीं सकते। किसी व्यक्ति के रहन-सहन के स्तर उसकी भाषाई संप्रेषणीयता और उसके मस्तिष्क का नवोन्मेषी विचार जगत किस तरह अनुवाद के बिना निष्क्रिय हो सकता है,इसकी कल्पना करना भी एक अजूबा है।भारतीय सामाजिक सरंचना में जब कोई व्यक्ति अपने जीवनकाल के लिए संघर्ष कर रहा होता है या अपनी रचनात्मकता को अपने विशिष्ट माध्यम में रुपांतरित कर रहा होता है तब अनुवाद किसी अदृश्य छवि सा लगभग प्रतिछाया बनकर उसके साथ मौजुद रहता है। यह कोई साधारण बात नहीं है आज का भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश जिस तरह बडे पैमाने पर अनुवाद का पिच्छलगू बन गय है इस पर व्यापक शोध और बडे पैमाने पर चिंतन की जरूरत है। अनुवाद केवल दो भाषाओं के बीच सेतु का काम ही नहीं करता वह आज के युग में एक वैश्विक संस्कृति को,विचारधारा को समझने और जीने का माध्यम बन गया है। कोई सोच सकता है कि विलियम शेक्स्पीयर ने जिस सदी में और जिस देशकाल,भाषा और परिस्थिति में रहते हुए जिस तरह अपना रचनाकर्म किया वह आज दुनिया की महत्वपुर्ण भाषाओं में अनुदित होकर किस तरह समसामयिक रक्तजीवी लगता है ।का लीदास को भी यहाँ उल्लेखित किया जा सकता है। कालीदास की तुलना,कालीदास के अनुवाद उसे कालजयी रचनाकार सिद्द करते हैं इसमें कोई दोराय नहीं भले ही उपनिवेश्वादी सोच और समय ने भारतीय रचनाकारों को वैश्विक पटल पर पीछे रखने की कोशिश की हो परंतु समय ने सिद्ध कर दिया कि कालीदास भारतीय मानस के अधिक निकट हैं ।भारतीय परिदृश्य में मीरा का होना पीढ़ी दर पीढ़ी वाचिक परंपरा का अपने आप में बिना किसी भाषिक परिवर्तन के अनुवाद का सकारात्मक और व्यवहारिक प्रतिफलन ही है"A translation not only regards a transition between two languages, but also concerns an exchange between two cultures, or two encyclopedias. A translator not only has to keep in mind rules which are strictly linguistic but also cultural features, in the broad sense of the term"[1] बिना सांस्कृतिक शब्दावली प्रयुक्तियों को जाने अनुवाद असंभव है क्योंकि अनुवाद केवल भाषाई स्तर पर नहीं होता है वहाँ दो संस्कृतियों को समझना बहुत जरूरी है बिना लक्ष्य भाषा की संस्कृति को जाने स्त्रोत भाषा से सामग्री अनूदित नहीं की जा सकती। संस्कृत को जाने बिना क्या कालीदास का अनुवाद संभव है या उस समय विशेष को जाने बिना क्या भास को जाना जा सकता है?

भास और कालीदास के शब्दक्रम को आज की इंटरनेट युगीन पीढ़ी सम्मान के साथ जरूरत पडने पर खोजती है और उस से वाकिफ होने का प्रयास करती है।

भारतीय व्यवस्था में डाक-तार महकमे से लेकर रेल व्यवस्था तक ब्रिटिश प्रशासनिक व्यवस्था का भारतीय रुपांतरण ही है।हमारा लोकतंत्र तथाकथित रूप से अनुवाद का ही हिस्सा माना जा सकता है। आई.ए.एस और आई पी एस की ब्युरोक्रेट परंपरा दरअसल ठेठ भारतीय परंपरा नहीं है,जिसके सहारे हमारा लोकतंत्र क्रियान्वित होता है।

[1] Alfred, G. S. (1966). *Communication and Culture*. In Nwankwo, R. L. (1979). Intercultural communication: A critical review (p.325). *Quarterly Journal of Speech, 65*(3).

बीसवीं सदी अनुवाद की सर्वाधिक महत्वपुर्ण और बहुआयामी अर्थों में प्रभावशाली शताब्दी इसलिये है कि इसी शताब्दी में व्यापक स्तर पर वैश्विक धरातल पर जीवन स्तर से लेकर जीवन संघर्ष तक सामाजिक,आर्थिक,सांस्कृतिक अनुवाद बडे पैमाने पर हुए हैं।इसी शताब्दी में विश्वयुद्ध हुए हैं इसी शताब्दी में लोमहर्षक नरसंहार और उत्कंठा को छूते हुए मानवीय व्यव्हार घटित हुए हैं। नाजीवाद का दुखद: प्रसंग भी इसी शताब्दी में हुआ है। जिसका व्यापक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अर्थ के बतौर,तत्कालिक भविष्य की सरंचना के रूप में और जातीय वर्गभेद की भेषभूषा में हुए अनुवाद का प्रतिफल हम सब आज भी भुगत और सहन कर रहे हैं। पाब्लो पिकासो जब अपना क्युबिज्म कैनवास पर उतार रहे थे तब वह अपने समय को रंगों और रेखाओं की भाषा में अनुदित कर रहे थे ।बर्जिनिया बुल्फ के अपना कमरा को पढने वाले पाठक उस रचना प्रक्रिया के समय,उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और उस समय लिखी जा रही अजनबी भाषा को अपनी भाषा और समय काल को अनुवाद के द्वारा ठीक-ठीक उसी तरह से महसूस कर सकते हैं। हम शेक्सपीयर के नाटकों का हिंदी अनुवाद किसी शीर्षस्थ रंग निर्देशक के काम में देख सकते हैं। कीट्स को अपनी भाषा के पूरे वैभवशाली सौंदर्य के साथ महसूस कर सकते हैं। यह केवल अनुवाद का ही जादू है। पिछली शताब्दी के लोमहर्षक व्यक्तित्व हिटलर के बहुआयामी अमानवीय कृत्यों का एक छोटा सा हिस्सा हम 'शिंडलर्स लिस्ट'जैसी हिंदी में डबिंग फिल्म में देख सकते हैं।"Translators have invented alphabets, helped build languages and written dictionaries. They have contributed to the emergence of national literatures, the dissemination of knowledge, and the spread of religions. Importers of foreign cultural values and key players at some of the great moments of history, translators and interpreters have played a determining role in the development of their societies and have been fundamental to the unfolding of intellectual history itself."[2] [Woodsworth:65]

भारतीय मिथक परंपरा और उसके वैभवशाली देवी-देवता ,वंशज,वैचारिक,काल्पनिक रुपांतरण का ही अलौकिक मायावी रूप है। दुर्गा माता के विसम्यकारी अवतार गहरे अर्थों में अनुवाद की ही सपनीली दौड लगते हैं। अनुवाद को व्याकरण और भाषा के दृष्टिकोण से और उसके फलीभूत होने वाले सांख्यिकी अर्थों में बांधकर देखा जा रहा है। विश्वव्यापी कार्पोरेट बाजार व्यवस्था में अनुवाद का अर्थ क्या है,यह हम जानते ही हैं।लिओनार्दो द विंची की सर्वाधिक महत्वपूर्ण कृति 'द लास्ट सफर'भविष्य में घटित होने वाली मृत्यु का पूर्वानुमान आधारित चित्र रूपांतरण थी। जिसे हम अपने जीवन के ही अंतिम भोज की तरह महसूस कर सकते हैं,इस प्रकार एक चित्रकार मनोभावों का रूपान्तरण करता है। चित्र भी एक भाषा ही है।

आज दुनिया में कई सारे ऐसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्पोरेट घराने हैं जिनका साम्राज्य असल में बहूभाषी और बहू सांस्कृतिक है। कोकाकोला कंपनी के मालिक को यह तो पता होगा की समूची दुनिया में उसका शीतल पेय का का यह ब्रांड किन किन भाषाओं में प्रिंट और बिजुअल माध्यम से बेचा जाता है। लेकिन वह उन भाषाओं से कोई सरोकार नहीं रखता। M. Brandes के अनुसार "translation is a kind of language mediation where

[2]. Woodsworth, Judith and Delisle, Jean (1995). Translators through History. Amsterdam: John Benjamins Publishing Co.

the content of the foreign text (original) is transferred to other language by way of creating a communicatively equivalent text in this language" [3] ।

M. Brandes अनुवाद को भाषाओं का मध्यस्थ बताते हुए उसे सेंस रेफरेंस को समझने की बात कहते हैं जिसका जिक्र हमने कालीदास और भास के संदर्भ में किया है। Nida and Taber भी लगभग इसी की तरफ संकेत करते हैं "*Translation consists in producing in the language of the receiver the closest natural equivalent of the source language message, first at the level of meaning, second at the level of style.*" अनुवाद सबसे पहले अर्थ के स्तर पर दूसरे शैली के स्तर पर स्त्रोत भाषा के करीब जाने का प्रयास करता है।

अनुवाद की वैश्विक अवश्यक्ता और महत्व :ऐसे कई क्षेत्र हैं यहाँ अनुवाद ने महत्वपुर्ण भुमिका निभाई है जिनके आधार पर हम उसकी वैश्विक पहुंच को रेखांकित कर सकते हैं –

External Affairs Of A Nation: विदेश मंत्रालयों में अनुवादक नियुक्तियां इसीलिये की जाती हैं ताकि वे सूचनाओं को तुरंत प्रचारित प्रसारित कर पाएं। दुनिया के विभिन्न देशों की कुटनीति को जानना अनुवाद के माध्यम से ही संभव है। दुनिया भर के लीडर चाहते हैं कि उनके द्वारा व्यक्त विचारों को दूसरे देशों के राजनयिक जान समझ सकें और अपने देश के नागरिकों को इसके बारे में अवगत करायें। कई बार यहाँ अनुवादकों का अल्पज्ञान अथवा जैसा कहा गया है वैसा अनुवाद ना कर पाने की सामर्थ्य की कमी के चलते कई राजनयिकों को यह कहते हुए पाया गया है कि मैंने वह नहीं कहा था जो विश्व भर में चर्चा का विषय बना हुआ है बल्कि मेरे आशय कुछ और थे।

Cultural Interchange: संस्कृतियों के आदान प्रदान में अनुवाद का महत्वपुर्ण योगदान है जब एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है तो सबसे पहले दो संस्कृतियों को एक साथ देखा जाता है।स्त्रोत भाषा का पाठ लक्ष्य भाषा में अपनी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को ले जाता है। एक भाषा की संस्कृति दूसरी भाषा की संस्कृति के साथ आदान प्रदान करती है।

Transfer Of News (सूचनाओं का आदान प्रदान) :

दुनिया भर की सभी सुचनाएं और समाचार तभी सही रूप में प्रचारित प्रसारित हो सकते हैं यदि न्युज एजेंसियों द्वारा सही समाचार प्राप्त किया जाये। इसमें भी सही सही अनुवाद आवश्यक है वरना अर्थ का अनर्थ होने की संभावना बनी रहती है।

इसके अलावा For The Realization Of Global Village और To Boost Tourism प्रर्यटन के क्षेत्र में भी अनुवाद का महत्वपुर्ण योगदान है। Contribute to a global economy वैश्विक बाजार में अनुवाद एक टूल के रूप में काम करता है। help the spread of ideas and innovation वैचारिक आदान प्रदान और नवाचारों की जानकारी एक देश से दूसरे देश में अनुवाद के माध्यम से ही पहुंचती है।

निष्कर्ष: प्रस्तुत शोध पत्र में हमने यह देखने का प्रयास किया की अनुवाद के माध्यम से कैसे विश्व बाजार अपनी संकल्पना को सार्थक कर पाया है।ग्लोबल इकोनोमी के लिए भाषाई मध्यस्थ के रूप में अनुवाद ने अपनी भूमिका निभाते हुए एक देश से दूसरे देश में संप्रेष्ण/संवाद की आवश्यकता को पूरा किया है। बहू राष्ट्रीय कंपनियों ने भिभिन्न भाषाओं में अपने प्रोडक्ट के लिए विज्ञापन तैयार करवाकर जैसे विश्व बाजार में अपने पैठ बनाई है वह

[3] Barhudarov L. S. (1975).Language and translation. Moscow

सर्व विदित है।अनुवाद के क्षेत्र में प्र्याप्त रोजगार के अवसर भी पैदा हुए हैं।विचारधाराएँ तेजी से एक देश से दूसरे देश का भ्रमण करते हुए लोगों के मानसिक जगत को प्रभावित कर रही हैं।

संदर्भ :

1. Alfred, G. S. (1966). *Communication and Culture*. In Nwankwo, R. L. (1979). Intercultural communication: A critical review . *Quarterly Journal of Speech*

2. Woodsworth, Judith and Delisle, Jean (1995). Translators through History. Amsterdam: John Benjamins Publishing Co

3. Barhudarov L. S. (1975).Language and translation. Moscow

4. Alesso, H. Peter & Smith, Craig F. 2006. Thinking on the Web – Berners-Lee, Gödel, and Turing. Hoboken: John Wiley & Sons, Inc.

5. Burnett, Robert & Marshall, P. David. 2003. Web Theory. An Introduction. London & New York: Routledge.

6. Chadwick, Andrew. 2006. Internet Politics – States, Citizens, and New Communication Technologies. New York & Oxford: Oxford University Press

7. Yuste Rodrigo, Elia (ed.). Topics in Language Resources for Translation and Localisation. Amsterdam & Philadelphia: John Benjamins.

8. Zetzsche, Jost. 2009. The Translator's Tool Box. A Computer Primer for Translators. Version 8. International Writers' Group, LLC. http://www.internationalwriters.com/toolbox/ [Accessed 10 May 2010].